REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 10 | JULY - 2018

डॉ. केसरी और उनका संस्मरण

डॉ. सतीश कुमार
सहायक प्राध्यापक, एम.एम.टी.एम. कॉलेज, दरभंगा.

संस्मरण शैली की दृष्टि से निबंध के बहुत निकट है। संस्मरण की विशेषता यह होती है कि उसमें ऐतिहासिकता का पुट अपेक्षतया अधिक होता है। जीवनचरित की तरह संस्मरण सत्य की लकीर नहीं पीटता। संस्मरणकार शैलानी जीव होता है, जो अपनी गंतव्य की राह के इर्द–गिर्द कल्पना के छायावन में विहार करता चलता है। ''संस्मरण लेखक जो स्वयं देखता और अनुभव करता है, वही लिपिबद्ध भी करता है। वह अपने समय का, अपने आस–पास के संसार का वर्णन करता है, और उसका यह वर्णन उसकी पुरी भावना और संवेदनशीलता से ओत–प्रोत रहता है।'' संस्मरण में विवरणों की प्रधानता होती है जो पाठक के मन पर एक गहरी छाप छोड़ जाती है। संस्मरणों में कल्पना का प्रयोग कम रहता है और उनमें इतिहास के तत्वों की प्रधानता रहती है। इतिहासकार या जीवनी लेखक की तरह संस्मरणकार निष्पक्ष और निर्लिप्त होने का दावा नहीं करता। संस्मरणीय व्यक्ति के प्रति संस्मरणकार का भाव इतना अंतरंग और आन्तरिक होता है कि उसमें व्यक्ति निरपेक्षता की गुंजाइश नहीं होती। दरअसल सहज स्वाभाविक संस्मरण में जो चित्र उभरता है उसमें पारिवारिक परिवेश होता है। संस्मरण में बहुधा वैयक्तिक जीवन अथवा व्यक्तिगत संपर्क में आए व्यक्तियों के किसी विशिष्ट क्षण, प्रहर अथवा कुछ अधिक कालखण्ड की स्मृतियों को अंकित किया जाता है। सम्पर्क में आया जनसामान्य भी संस्मरण का अंग बन सकता है।

प्रेमचंद का मानना है कि –''मेरे घर के मेहतर के जीवन में भी कुछ ऐसे रहस्य है जिनसे हमें प्रकाश मिल सकता है। हम तो कहते हैं कि मामूली मजदूर में भी खोजने से ऐसी बातें मिल जायेगी जो अमर साहित्य का विषय बन सकती है केवल देखने वाली आँख और लिखनें वाली कलम चाहिए।''

डॉ० कलक्टर सिंह 'केसरी' समकालीन साहित्य संस्मरण की दृष्टि से काफी समृद्ध है। डा० केसरी ने अपने जीवन में अनेक साहित्यिक उतार–चढ़ाव देखे, अनेक साहित्यकारों की संगति की, अनेक अंतरंग भी रहे। अपने संस्करणों में उन्होंने उन साहित्यकारों के साथ व्यतीत किये गये क्षणों को ईमानदारीपूर्वक संजोया है। 'अक्षर पुरूष' में संकलित 10 संस्मरणों के अलावा डा० केसरी ने 9 अन्य संस्मरण भी लिखे हैं। एक या दो मुलाकात के आधार पर संबंधित व्यक्ति का पूरा चित्र उतार देने में वे माहिर हैं। वैसे डा० केसरी ऐसा नहीं मानते अक्षर पुरूष की भूमिका में वे कहते हैं ''मेरे ये संस्मरण हैं कुछ देखी–सुनी, जानी–पहचानी, हल्की–फुलकी बातों का संकलन। ये मात्र झांकियां हैं बिहार के 10 कृति साहित्यकारों के जीवन की। इनमें इन साहित्यकारों का न तो जीवनचरित और न ही उनकी कृतियों का विवेचन या समीक्षा। व्यक्तित्व की आदमकद तस्वीर इन संस्मरणों में उतर नहीं पायी है– ऐसा होना संभव भी नहीं। ये तो हैं वक्तन–फवक्तन खींची हुई कुछ चित्र–रेखाएं जिनमें व्यक्तित्व के कुछेक पहलू ही रूपायित हो सके हैं।

''राजा साहब' (राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह) संस्मरण में पहली मुलाकात का चित्रण डा० केसरी ने जिस प्रकार किया है उससे राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह का संपूर्ण व्यक्तित्व रूपायित हो जाता है– ''राजा

साहब से जब मेरी पहली मुलाकात हुई तो एकाएक आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। मेरे मानसपटल पर उनका जो चित्र मेरी कल्पना ने उरेह रखा था, वह एक बारगी धुल–पुछ गया। सोंचा था, सूर्यपुराधीश हैं, आमोद–प्रमोद और विलासिता के बीच जनमें, पले, ठाठ–बाट में रहते होंगे और रोबीले मुख–मुद्रा कहती होगी– 'मुझसे अदब से बातें करो'। .....मोटी–धोती और भी शरीर पर एक चादर, पैरों में चप्पल–इस वेशभूषा में कहीं कोई राजा रहता है?[4]

आचार्य शिवपूजन सहाय 72 वर्ष को उम्र में भी जिंदादिल थे। उनके तबीयत की ताजगी तथा रंगीनी का एक सुंदर चित्रण डा० केसरी ने 'अजातशत्रु भवजी' में किया है। समस्तीपुर स्टेशन को पुल पार करने में लेखक का सहयोग लेने से इंकार करते हुए आचार्य सहाय कहते हैं– सुनिये केसरी जी, भोजपुरिया हूँ जहाँ सट्ठा तब पट्ठा। विशुद्ध घी–दूध का सौरभ ले चुका हूँ, डालडा युग का नहीं हूँ।'' जो कपड़े पहन रखे थे, मात्र उन्हीं को लेकर शिवजी आ गये थे। पूछने पर कहा–'' सुबह रात रहते गाड़ी पकड़नी थी। बेटे–पतोहू को उठाते तो कदाचित वे आने नहीं देते।'' फिर अपनी जादू–भरी मुस्कान के साथ–'' और जवान बेटे–पतोहू की कच्ची नींद तोड़ना भी ठीक नहीं समझा? रामवृक्ष बेनीपुरी लेखक डा० केसरी की नजर में कामद कल्पवृक्ष थे। उस समय दिनकर प्रभात समेत अन्य प्रसिद्ध तथा नये साहित्यकारों के वे मार्गदर्शक थे। बेनीपुरी लेखन में सरल शब्दों के पक्षधर रहे हैं। एक महत्त्वपूर्ण प्रसंग का उल्लेख डा० केसरी ने 'बेनीपुरी जी' नामक संस्मरण में किया है–'' साहित्य में प्रगतिवाद की चर्चा चल रही थी। दिनकर द्वारा प्रयुक्त 'कृषक मेघ' शब्द की सराहना के बाद बेनीपुरी ने मेरी ओर मुखातिब होकर कहा– 'किंतु भाई, तुम हिंदी के कवि शब्दों में वह सरल–सहज बाँकपन नहीं ला सके हो जो उर्दू–केशा–यरों को हासिल है। सुनो ये पंक्तियाँ–तुम तो कहते थे बिस्तर से चला जाता नहीं।

आज दुनिया–से चले जाने की ताकत आ गई?
तुम लोग इतनी सुगमता से इतनी गहरी बात कह सकोगे?''

रामधारी सिंह दिनकर डा० केसरी के कहीं नजदीक रहे हैं। उनके साथ व्यवती पल संस्मरणकार के लिए बहुमूल्य पूंजी है। दिनकर को केन्द्रित दो संस्मरण उन्होंने लिखे हैं–' मेरा सहपाठी राष्ट्रकवि' तथा 'दिनकर कुछ झाँकियां।' डा० केसरी दिनकर के सहपाठी रहे हैं। यहाँ तक कि 'कमल' उपनाम से 'केसरी' बनने में भी दिनकर की ही भूमिका रही। दिनकर से पहली मुलाकात का चित्र डा० केसरी की आँखों में हमेशा तैरता रहा– ''दिनकर के साथ जो मेरी पहली मुलाकात हुई थी, उसके दबंग 'दिनकरी ढ़ंग' की याद आज भी ताजा है। शाम के वक्त पटना कालेज के मैदान में मैं फुटबाल खेल रहा था। देखा मैदान की पूरब वाली सड़क के किनारे खड़ा कोई पुकार रहा है–'अरे ओ कलक्टर साहब, यहाँ कमिश्नर तुम्हें खोज रहा है और तुम हो कि दौड़े जा रहे हो, दौड़े जा रहे हो।' मैं सड़क पर आया और देखा कि सामने जो खड़ा है वह तो अपना एक सहपाठी है–दप रप गोरा चेहरा, लंबी छरहरी अंगयष्टि, जो छोटी–कुरते में जैसे झूम रही है।'' दिनकर आगे चलकर आत्माभिमान से हो गये थे। पुराने संगी–साथी को शिकायत रहती थी कि वे अब पहले जैसे नहीं रहे। डा० केसरी ने भी इसे महसूस यिका–'' इतना तो मानना ही होगा कि दिनकर के व्यक्तित्व में राज सी गुण का प्राबल्य था। कवि–कीर्ति के फैलाव के साथ दिनकर का आत्माभिमान भी फैलता गया। जिन्हें दिनकर को नजदीक से देखने का अवसर नहीं मिला था, वे कवि को किन्ही– क्षणों में आत्यंतिक आत्म संभावित किंवा अहेमन्य मान लेते थे। किंतु कुछ ऐसे लोग भी थे, जो दिनकर के पुराने साथी रहे और पीछे चलकर जिनकी शिकायत रही कि तब के दिनकर और अब के दिनकर के बीच खाई पड़ गई है।[8]

'अक्षर पुरूष' में राजा साहब, अजातशत्रु शिवजी, बेनीपुरी जी तथा मेरा सहपाठी राष्ट्रकवि के अलावा मास्टर साहब (आचार्य राम लोचन शरण), पुण्यश्लोकी पंडितजी (पं0 जगनाथ प्रसाद मिश्र), माधुर्यमयी मूर्ति : माधवजी (भुवनेश्वर नाथ मिश्र माधव), स्वनामधन्य सुधांशुजी (लक्ष्मी नारायण सुधांशु), विद्यार्थी (दिवाकर प्रसाद विद्यार्थी) तथा नलिनजी (नलिन विलोचन शर्मा) नामक संस्मरण संग्रहित है। इसके अलावा बापू: प्रथम दर्शन, विनोबा : शिवत्व के आलोक पुरूष, श्रद्धेय चतुर्वेदी जी, कविवर द्विज जी भाई रसूलपुरीजी, दिनकर कुछ झांकियां, पुण्यश्लोकी पंडितजी तथा महापंडित राहुलजी नामक संस्मरण भी डा० केसरी ने लिखा है।

इन संस्मरणों के बारे में स्वयं केसरी जी की उद्‌भावना है–'' इन संस्मरणों को मैंने उसी मनःस्थिति में लिखा है जिसमें मैं कविताएँ लिखता हूँ। मतलब, मैंने शुष्क विचारों का भावना की चाशनी चढ़ाई है और घटनाओं पर कल्पना की रंगीनी।''[9] संस्मरण में भावना व कल्पना की रंगीनी का सुंदर सम्मिश्रण करने वाले केसरी जी अपनी तरह के अकेले संस्मरणकार है। वे संस्करण साहित्य में अभिवृद्धि तथा उसे पहचान दिलाने वालों की अग्रिम पंक्ति के रचनाकार हैं।

संदर्भ सूची–

1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र, लेखक डा० कृष्णदेव शर्मा विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, पृ0–281
2. हंस (संस्मरण अक) 1932इ ई. भूमिका
3. केसरी ग्रंथावली, प्रकाशन ज्ञान गंगा, दिल्ली, पृ0–748
4. केसरी ग्रंथावली, प्रकाशन ज्ञान गंगा, दिल्ली, पृ0–493
5. केसरी ग्रंथावली, प्रकाशन ज्ञान गंगा, दिल्ली, पृ0–502
6. केसरी ग्रंथावली, प्रकाशन ज्ञान गंगा, दिल्ली, पृ0–513
7. केसरी ग्रंथावली, प्रकाशन ज्ञान गंगा, दिल्ली, पृ0–524
8. केसरी ग्रंथावली, प्रकाशन ज्ञान गंगा, दिल्ली, पृ0–533
9. केसरी ग्रंथावली, प्रकाशन ज्ञान गंगा, दिल्ली, पृ0–750